वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 325
ISBN-978-93-80353-64-7

श्री वास्तु विधान

– रचयित्री –
प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

भगवान शांतिनाथ जन्म, दीक्षा व निर्वाणकल्याणक दिवस–ज्येष्ठ कृ. चतुर्दशी, 11 जून 2010 को जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा घोषित ''प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर वर्ष'' के अन्तर्गत प्रकाशित

-प्रकाशक-
दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.
फोन नं.- (01233) 280184, 292943
Website : www.jambudweep.org
E-mail : ravindrajain@jambudweep.org

COURTESY–JAIN BOOK DEPOT
C/o Shri Nabhi Kumar Manav Kumar Jain
C-4, Opp. PVR Plaza, Cannaught Place, New Delhi-1
Ph.-011-23416101-02-03/Website : www.jainbookdepot.com

प्रथम संस्करण	वीर निर्वाण संवत् 2537	मूल्य
3300 प्रतियाँ	माघ कृ. चतुर्दशी, 1 फरवरी 2011	20/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

-: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :-

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

-: मार्गदर्शन :-

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

-: निर्देशन :-

धर्मदिवाकर पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज

-: सम्पादक :-

कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन

वर्तमान में देखा जा रहा है कि दिन-प्रतिदिन वास्तु विद्या का प्रचलन बढ़ता जा रहा है। कोई चाहे आलीशान भवन बनवा रहा हो, अथवा छोटा सा मकान या दुकान, सभी की यह इच्छा रहती है कि इसे वास्तुशास्त्री से परामर्श करके ही बनवाया जाये। कुछ लोग कहने लगते हैं कि पहले के लोग तो वास्तु शास्त्र नहीं जानते थे, तब भी तो घर बनते थे और उनमें रहने वाले शांतिपूर्वक रहते थे, उन्हें कोई बीमारी नहीं आती थी, ऐसा क्यों? जहाँ तक मैं समझता हूँ कि वास्तु विद्या तो प्राचीनकाल से है, पुराने समय में लोगों के हृदय में संतोष, सहनशीलता, सौहार्द आदि गुण थे अतः उन्हें अशांति का अधिक प्रसंग नहीं आता था, अब वर्तमान में लोगों की आवश्यकताएँ बढ़ती जा रही हैं, सहनशीलता समाप्त होती जा रही है, ईर्ष्या-द्वेष की भावना बलवती हो रही है अतः आपसी बैर, अराजकता, अनाचार आदि पनपने लगे हैं, ऐसे समय में लोगों के मन में अनेक प्रकार के विकल्प उत्पन्न होने लगते हैं जिसमें से एक विकल्प यह भी है कि हमने अपने घर को अथवा दुकान को वास्तु के हिसाब से नहीं बनवाया, इसीलिए ऐसा हो रहा है पुनः वे वास्तुशास्त्री के परामर्शानुसार मकान, दुकान बनवाकर शांति-समृद्धि का अनुभव करके प्रसन्नतापूर्वक जीवनयापन करने लगते हैं।

वर्तमानयुग की इस आवश्यकता को महसूस करते हुए पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की परम शिष्या प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने ''वास्तु विधान'' नामक इस कृति की सरलरूप में रचना की है, इसमें 49 प्रकार के वास्तु संबंधी देवों की अर्चना की गई है ताकि प्रत्येक कार्य निर्विघ्नरूप से सम्पन्न हो सके।

इस ''वास्तु विधान'' को करके आप सभी अपने जीवन को मंगलमय बनाएँ, यही मंगलभावना है।

प्रस्तावना

–ब्र. कु. सारिका जैन (संघस्थ)

जैनधर्म के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर की दिव्यध्वनि से प्रगटित तथा गौतम गणधर देव द्वारा रचित द्वादशांग जिनवाणी की अविरल ज्ञानधारा परम्परा से आज भी प्रवाहमान है। इसमें से दृष्टिवाद नामक 12वें अंग के पाँच भेद हैं– परिकर्म, सूत्र, प्रथमानुयोग, पूर्वगत और चूलिका, पुनः इसमें चूलिका पाँच प्रकार की है- जलगता, स्थलगता, मायागता, रूपगता और आकाशगता। इसमें द्वितीय स्थलगता चूलिका मंत्र-तंत्र-तपश्चरण आदि का तथा वास्तु विद्या एवं भूमि संबंधी दूसरे शुभाशुभ कारणों का वर्णन करती है। इसका अर्थ यह हुआ कि वास्तु विद्या एवं भूमि के शुभाशुभ का विषय भी वीतराग जिनेन्द्रदेव द्वारा उपदिष्ट एवं चार ज्ञान एवं सात ऋद्धियों के धारी गणधरदेव द्वारा रचित है।

अब कोई यह पूछे कि वास्तु विद्या की आवश्यकता क्यों पड़ी? तो इसका मूलकारण यह है कि प्रत्येक संसारी प्राणी का जीवन अभ्यन्तर और बाह्य, इन दो साधनों पर आधारित है जिनमें से इन्द्रिय, बल, आयु, स्वासोच्छ्वास तथा आठ कर्मों का बंध होना अभ्यन्तरसाधन हैं तथा देवमंदिर, प्रासाद, भवन, गृह, कुटिया तथा इनसे संबंधित आसन, शैय्या, सवारी, वसन तथा कुंआ, बावड़ी, तालाब, बाग-बगीचा आदि बाह्य साधन हैं अतः प्रत्येक प्राणी के जीवन में इन दोनों साधनों की पूर्ति में वास्तु विद्या का भी एक स्थान है।

वर्तमान में चारों तरफ अशांति, रोग, आपसी वैमनस्य, धनहानि, कलह आदि को देखते हुए इस वास्तु विद्या की अधिक आवश्यकता महसूस की जा रही है। अनेक शिल्प शास्त्रों में भी महल और मकान आदि के विषय में कहा गया है कि–

अपना, राजा का और प्रजा का कल्याण चाहने वाले को जिनमंदिर, जिनप्रतिमा और उनके उपकरण आदि शिल्प शास्त्रानुसार ही बनाने चाहिए। शिल्पशास्त्रों के नियमों का कभी भी उल्लंघन नहीं करना चाहिए।

आज भी प्रत्येक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा आदि के समय, नूतन मंदिर निर्माण के समय अथवा नूतन गृहप्रवेश के समय वास्तु विधान करने की परम्परा है। यह वास्तु विधान प्रतिष्ठातिलक ग्रंथ में संस्कृत भाषा में है, जो कि पढ़ने और करने वालों को समझ में नहीं आता था अतः पूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने उसी के आधार से इस वास्तु विधान की हिन्दी में रचना करके इसे सुमधुर बना दिया है इसमें पूज्य आर्यिका श्री ने वास्तु विधान की नई पूजा बनाकर अनेक हिन्दी पद्यों द्वारा मण्डल पर अनेकानेक देवों को भिन्न-भिन्न प्रकार के नैवेद्य आदि अर्पित करने

की विधि का स्पष्टीकरण कर दिया है अतः अब इस विधान की रचना इतने सरलरूप में हो गई कि बिना विद्वान्, पण्डित की सहायता के भी इसे आसानी से किया जा सकता है। इसमें प्रारंभ की भूमिशोधन आदि विधि, वास्तु देवों के अर्घ्य संस्कृत में तथा अन्त में श्लोक आदि सब कुछ प्रतिष्ठातिलक ग्रंथ से ही दिया गया है। मात्र संस्कृत श्लोकों का हिन्दी भावानुवाद एवं पूजन-जयमाला की स्वतंत्र रचना पूज्य माताजी ने की है। इससे पूर्व भी पूज्य चंदनामती माताजी ने भक्तामर विधान, नवग्रहशांति विधान, तीर्थंकर जन्मभूमि विधान, कल्याण मंदिर विधान आदि अनेक विधानों की रचना करके धर्म से विमुख लोगों को भी धर्मप्रेम में स्थिर किया है। हमें यह अपना परम सौभाग्य समझना चाहिए कि पूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी अपनी व्यस्ततम दैनिक चर्या में से समय निकालकर हमें नए-नए भजन, पूजन, विधान आदि रचकर देती रहती हैं व्यस्ततम दैनिक चर्या मैंने इसलिए कहा कि आर्यिका जीवन में प्रतिदिन 2 बार प्रतिक्रमण, तीन बार सामायिक, चार बार स्वाध्याय, ध्यान, अध्ययन, प्रवचन, भक्तों की शंकाओं का समाधान, गुरुसेवा एवं महान ग्रंथराज षट्खण्डागम के सूत्रों पर पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा रचित सिद्धान्तचिंतामणि संस्कृत टीका की हिन्दी टीका लेखन, इतने सब कार्यों का सम्पादन करके पुनः अन्य रचनाएँ कर लेना वास्तव में महत्वपूर्ण बात है।

सर्वप्रथम इस वास्तु विधान के प्रारंभ में पूज्य माताजी ने शंभु छंद में स्थापना के पद्य के बाद प्रथम आशीर्वादस्वरूप दोहे में लिखा है कि–

मंदिर-महल-मकान का, वास्तु रहे सुखकार।
स्वस्थ-सुखी हों भक्तजन, सुखी रहे संसार।।

वास्तव में साधु-संतों के हृदय में सभी के प्रति कितनी करुणा छिपी रहती है कि किसी को, किसी के द्वारा, किसी भी प्रकार का कष्ट न होने पाए।

पुनः अष्टद्रव्य से पूजन के पश्चात् मण्डल पर दशों दिशाओं पर दशदिक्पालों की स्थापना करके दश अर्घ्य चढ़ाना है। इसके बाद इन्द्र, अग्नि, यम आदि 49 वास्तु देवों के 49 अर्घ्य मण्डल पर चढ़ाना है इसमें प्रत्येक अर्घ्य के साथ प्रत्येक देव के लिए पृथक्-पृथक् नैवेद्य को चढ़ाए जाने की विधि है पुनः अन्त में सुन्दर जयमाला है।

जयमाला पूर्णार्घ्य के बाद प्रशस्ति के माध्यम से पूज्य माताजी ने विधान रचना का काल दिया है, जो कि कृति की प्रामाणिकता को दीर्घकाल तक स्थायित्व प्रदान करने में कारणभूत है।

इस प्रकार इस वास्तुविधान को करके आप सभी भक्तगण सुख-शांति-समृद्धि-आरोग्यता-ऐश्वर्य आदि की प्राप्ति करें, यही इसकी सार्थकता है।

विधान की रचयित्री, पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका

श्री चन्दनामती माताजी का संक्षिप्त परिचय

-ब्र. कु. बीना जैन (संघस्थ)

नाम– प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

दीक्षा पूर्व नाम– ब्र. कु. माधुरी शास्त्री

जन्मतिथि– 18-5-1958 (ज्येष्ठ कृष्णा अमावस्या)

जन्मस्थान– टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

माता-पिता– श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जी जैन

भाई– चार (कैलाशचंद, स्व. प्रकाशचंद, सुभाषचंद एवं कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन)

बहन– आठ (गणिनी आर्यिका शिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी एवं आर्यिका श्री अभयमती माताजी सहित)

लौकिक शिक्षा– हाईस्कूल

ब्रह्मचर्यव्रत– 25 अक्टूबर 1969 को जयपुर में 2 वर्ष का ब्रह्मचर्यव्रत एवं सन् 1971, अजमेर में आजन्म ब्रह्मचर्य सुगंध दशमी को गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी से

धार्मिक अध्ययन– 1972 में सोलापुर से "शास्त्री" की उपाधि, 1973 में "विद्यावाचस्पति" की उपाधि

द्वितीय एवं सप्तम प्रतिमा के व्रत– सन् 1981 एवं 1987 में गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी से

आर्यिका दीक्षा– हस्तिनापुर में 13-8-1989, श्रावण शु. 11 को गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी से

प्रज्ञाश्रमणी की उपाधि– 1997 में चौबीस कल्पद्रुम महामण्डल विधान के पश्चात् राजधानी दिल्ली में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा।

साहित्यिक योगदान– चारित्रचन्द्रिका, तीर्थंकर जन्मभूमि विधान, नवग्रहशांति विधान, भक्तामर विधान, समयसार विधान आदि शताधिक पुस्तकों का लेखन, वर्तमान में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा "षट्खण्डागम (प्राचीनतम जैन सूत्र ग्रंथ) की संस्कृत टीका एवं "भगवान ऋषभदेव चरितम्" की संस्कृत टीका का हिन्दी अनुवाद कार्य, 'समयसार' एवं 'कुन्दकुन्दमणिमाला' इत्यादि ग्रंथों का पद्यानुवाद। भजन (300 से अधिक), पूजन, चालीसा, स्तोत्र इत्यादि लेखन की अद्भुत क्षमता, हिन्दी भाषा के साथ-साथ अंग्रेजी, संस्कृत आदि भाषाओं की सिद्धहस्त लेखिका, गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ की प्रधान सम्पादिका।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

-पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से सन् 1972 में राजधानी दिल्ली में हुई थी। संस्थान का मुख्य कार्यालय सन् 1974 से हस्तिनापुर में प्रारंभ हुआ। इस संस्थान के अन्तर्गत अनेक गतिविधियाँ हस्तिनापुर में तथा अन्यत्र चल रही हैं-

1. सन् 1972 से वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के अन्तर्गत लाखों ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं।

2. सन् 1974 से इस संस्थान के मुखपत्र के रूप में 'सम्यग्ज्ञान' हिन्दी मासिक पत्रिका का निरंतर प्रकाशन हो रहा है।

3. सन् 1974 से 1985 तक हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कार्य हुआ।

4. सन् 1974 से अब तक जम्बूद्वीप रचना के अतिरिक्त अनेक जिनमंदिरों का निर्माण हुआ है-कमल मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, ध्यान मंदिर, शांतिनाथ मंदिर, वासुपूज्य मंदिर, ॐ मंदिर, सहस्रकूट मंदिर, विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर, आदिनाथ मंदिर, अष्टापद मंदिर, ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ, स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना, नवग्रहशांति जिनमंदिर, तीन लोक रचना एवं श्री शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग प्रतिमाओं की स्थापना।

5. जम्बूद्वीप पुस्तकालय जिसमें लगभग 15000 ग्रंथ संग्रहीत हैं।

6. णमोकार महामंत्र बैंक जिसमें भक्तों द्वारा लिखकर भेजे गये करोड़ों णमोकार मंत्र जमा किये जाते हैं।

7. समय-समय पर शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों तथा संगोष्ठियों के आयोजन किये जाते हैं।

8. यात्रियों के शुद्ध भोजन के लिए राजा श्रेयांस भोजनालय का संचालन।

9. यात्रियों के ठहरने के लिए आधुनिक सुविधायुक्त डीलक्स फ्लैट्स वाली छई धर्मशालाओं तथा कोठियों एवं बंगलों का निर्माण किया गया है।

10. जम्बूद्वीप परिक्रमा के लिए नौका विहार, ऐरावत हाथी तथा मनोरंजन हेतु मिनी ट्रेन, झूले आदि हैं।

11. ज्ञानमती कला मंदिरम् में हस्तिनापुर के प्राचीन इतिहास से संबंधित झाँकियाँ हैं।

12. तीर्थंकर जन्मभूमियों की वंदना एवं धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन करने वाले थियेटर से समन्वित गणिनी ज्ञानमती हीरक जयंती एक्सप्रेस।

दिल्ली, मेरठ, मुजफ्फरनगर, हरिद्वार, झाँसी, तिजारा आदि से जम्बूद्वीप स्थल तक आने के लिए दिन भर बसें मिलती रहती हैं।

दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में भव्य "नंद्यावर्त महल" तथा प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में निर्मित तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का भी संचालन होता है।

जम्बूद्वीप एवं अन्य रचनाओं के दर्शन हेतु हस्तिनापुर पधारकर आध्यात्मिक एवं भौतिक सुख की प्राप्ति करें।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के शिरोमणि संरक्षक

1. श्रीमती निर्मला जैन ध.प. स्व. श्री प्रेमचन्द्र जैन, तत्पुत्र प्रदीप कुमार जैन, खी बावली, दिल्ली-6।
2. श्रीमती सुमन जैन ध.प. श्री दिग्विजय सिंह जैन, इंदौर।
3. श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति, जी-19, साऊथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली।
4. श्री महेन्द्र पाल हरेन्द्र कुमार जैन, सूरजमल विहार, दिल्ली।
5. श्रीमती मोहनी जैन ध.प. श्री सुनील जैन, प्रीत विहार, दिल्ली।
6. श्री देवेन्द्र कुमार जैन (धारूहेड़ा वाले) गुड़गाँव (हरि.)।
7. श्रीमती शारदा रानी जैन ध.प. स्व. रिखबचंद जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
8. डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
9. श्रीमती संगीता जैन ध.प. श्री संजीव कुमार जैन, शेरकोट (बिजनौर) उ.प्र.
10. श्री अनिल कुमार जैन, दरियागंज, दिल्ली
11. श्री बी.डी. मदनाइक, मुम्बई
12. श्री धनकुमार जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
13. श्री जितेन्द्र कुमार जैन एवं श्रीमती सुनीता जैन कोटड़िया, फ्लोरिडा, यू.एस.ए.
14. श्रीमती विमला देवी जैन ध.प. श्री ओमप्रकाश जैन, स्वालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।
15. श्री अमित जैन एवं संभव जैन सुपुत्र श्रीमती अनीता जैन ध.प. श्री मूलचंद जैन पाटनी, दिसपुर (कामरूप) आसाम।
16. श्रीमती अजित कुमारी जैन ध.प. श्री महेन्द्र कुमार जैन, ओबेदुल्लागंज (रायसेन) म.प्र.।
17. श्री नाभिकुमार जैन, जैन बुक डिपो, सी-4, पी.वी.आर. प्लाजा के पीछे, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के परम संरक्षक

1. श्री माँगीलाल बाबूलाल पहाड़े, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
2. डॉ. प्रकाशचन्द्र जैन, 792 विवेकानंदपुरी, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
3. श्री सुमत प्रकाश जैन, गज्जू कटरा, शाहदरा, दिल्ली।
4. श्री सुनील कुमार जैन, द्वारा-सुनील टैक्सटाईल्स, सरधना (मेरठ) उ.प्र.।
5. श्री प्रकाश चंद अमोलक चंद जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
6. श्री प्रद्युम्न कुमार जवेरी, रोकड़ियालेन, बोरीवली (वेस्ट) मुंबई।
7. श्रीमती उर्मिला देवी ध.प. श्री कान्ती प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
8. श्रीमती उषा जैन ध.प. श्री विमल प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
9. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले), गांधीनगर, दिल्ली।
10. श्रीमती सरिता जैन ध.प. श्री राजकुमार जैन, किदवई नगर, कानपुर।
11. स्व. श्रीमती कैलाशवती ध.प. श्री कैलाश चन्द्र जैन, तोपखाना बाजार, मेरठ।
12. श्री भानेन्द्र कुमार जैन, द्वारा-श्री विद्या जैन, भगत सिंह मार्ग, जयपुर।
13. श्री प्रदीप कुमार शान्तिलाल बिलाला, अनूपनगर, इंदौर, (म.प्र.)।
14. श्री सुरेशचंद पवन कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
15. श्री नथमल पारसमल जैन, कलकत्ता-7।
16. श्रीमती स्व. शांताबाई ध.प. श्री कमलचंद जैन, सनावद (म.प्र.)।
17. श्री रूपचंद जैन कटारिया, दिल्ली
18. श्री आशु जैन, कालका जी, नई दिल्ली

श्री वास्तु विधान

सर्वप्रथम ९ बार णमोकार मंत्र पढ़ें, पुनः मंगलाष्टक पढ़कर पंचकुमार की पूजापूर्वक भूमिशोधन विधि सम्पन्न करें।

–मंगलाष्टक–

श्रीमन्नम्र-सुरासुरेन्द्र-मुकुट-प्रद्योत-रत्नप्रभा-
भास्वत्पाद-नखेन्दवः प्रवचनाऽम्भोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिन-सिद्ध-सूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः
स्तुत्या योगिजनैश्च पंचगुरवः कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम् ।।१।।

सम्यग्दर्शन-बोध-वृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं
मुक्ति-श्री-नगराऽधिनाथ-जिनपत्युक्तोऽपवर्गप्रदः।
धर्मः सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्र्यालयं
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्।।२।।

नाभेयादि-जिनाधिपास्त्रिभुवनख्याताश्चतुर्विंशतिः
श्रीमन्तो भरतेश्वरप्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णु-प्रतिविष्णु-लाङ्गलधराः सप्तोत्तरा विंशति-
स्त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टिपुरुषाः कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्।।३।।

देव्योऽष्टौ च जयादिका द्विगुणिता विद्यादिका देवता
श्रीतीर्थंकरमातृकाश्च जनका यक्षाश्च यक्ष्यस्तथा।
द्वात्रिंशत् त्रिदशाऽधिपास्तिथिसुरा दिक्कन्यकाश्चाष्टधा
दिक्पाला दश चेत्यमी सुरगणाः कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्।।४।।

ये सर्वौषधऋद्धयः सुतपसो वृद्धिंगता पंच ये
ये चाष्टांग-महानिमित्त-कुशला येऽष्टौ विधाश्चारणः।
पंचज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो ये बुद्धिऋद्धीश्वराः
सप्तैते सकलार्चिता गणभृतः कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्।।५।।

कैलाशे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरे
चम्पायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः सम्मेदशैलेऽर्हताम्।
शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो
निर्वाणाऽवनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्।।६।।

ज्योतिर्व्यन्तर-भावनाऽमरगृहे मेरौ कुलाद्रौ तथा
जम्बू-शाल्मलि-चैत्यशाखिषु तथा वक्षार-रूप्याद्रिषु।
इष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे द्वीपे च नन्दीश्वरे
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्।।७।।

यो गर्भाऽवतरोत्सवो भगवतां जन्माऽभिषेकोत्सवो
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक्।
यः कैवल्यपुरप्रवेशमहिमा संभावितः स्वर्गिभिः
कल्याणानि च तानि पंच सततं कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्।।८।।

इत्थं श्रीजिनमंगलाष्टकमिदं सौभाग्य-संपत्प्रदं
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकराणामुषः।
ये शृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनैर्धर्मार्थकामान्विता
लक्ष्मीराश्रयते व्यपायरहिता निर्वाणलक्ष्मीरपि।।९।।

।। इति मंगलाष्टकम्।।

अथ भूमिशोधनम्—भूमिशोधन विधि

घंटाटंकारवीणाक्वणितमुरज-धां-धां क्रियाकाहलाच्छें -
च्छेंकारोदारभेरीपटहधलधलंकारसंभूतघोषे ।
आक्रम्याशेषकाष्ठाततमथ झटिति प्रोच्चटत्युद्भटेऽभ्रं।
शिष्टाभीष्टार्हदिष्टिप्रमुख इह लतांतांजलिं प्रोत्क्षिपामः।।१।।

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे नमो नमः । स्वस्ति स्वस्ति जीव जीव नंद नंद वर्द्धस्व वर्द्धस्व विजयस्व विजयस्व अनुशाधि अनुशाधि पुनीहि पुनीहि पुण्याहं पुण्याहं मांगल्यं मांगल्यं पुष्पांजलिः।। (पुष्पांजलि करें)

क्षेत्रं मखेऽस्मिन्परिपालयन्तं, विघ्नानशेषानपसारयन्तम्।
वैश्वानराशापरिकल्पितेन, श्रीक्षेत्रपालं बलिना धिनोमि।।२।।

ॐ ह्रीं अत्र स्थितक्षेत्रपालाय स्वाहा। *इति क्षेत्रपालार्चनम् ।*

(क्षेत्रपाल को अर्घ्य चढ़ावें)

सर्वेषु वास्तुषु सदा निवसन्तमेनं, श्रीवास्तुदेवमखिलस्य कृतोपकारं।
प्रागेव वास्तुमिह कल्पितयज्ञभाग-स्यैशानकोणदिशि पूजनया धिनोमि।।३।।

ॐ ह्रीं वास्तुदेवाय इदमर्घ्यं प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

विहारकाले जगदीश्वराणा-मवाप्तसेवार्थकृतापदान।
हुत्वार्चितो वायुकुमार देव, त्वं वायुना शोधय यागभूमिम्।।४।।

ॐ ह्रीं वायुकुमाराय सर्वविघ्नविनाशनाय इदमर्घ्यं प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां।। महीं पूतां कुरु कुरु हूं फट् स्वाहा।।

(डाभ के पूले से जमीन का शोधन करें)

विहारकाले जगदीश्वराणा - मवाप्तसेवार्थकृतापदान।
हुत्वार्चितो मेघकुमारदेव, त्वं वारिणा शोधय यागभूमिम्।।५।।

ॐ ह्रीं मेघकुमाराय सर्वविघ्नविनाशनाय इदमर्घ्यं प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां। धरां प्रक्षालय प्रक्षालय अं हं सं वं झं ठं क्षः फट् स्वाहा।

(डाभ के पूले से जल लेकर भूमि पर छिड़कें)

गर्भान्वयादौ महितद्विजेन्द्रैर्निर्वाणपूजासु कृतापदान।
हुत्वार्चितो वन्हिकुमारदेव, त्वं ज्वालया शोधय यागभूमिम्।।६।।

ॐ ह्रीं अग्निकुमाराय इदमर्घ्यं प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां। भूमिं ज्वालय ज्वालय अं हं सं वं झं ठं क्षः फट् स्वाहा।

(डाभ जलाकर या कपूर जलाकर भूमि शुद्ध करें)।।

(पूर्व और ईशान के मध्य में वायुकुमारादि की स्थापना करना)

तुष्टा अमी षष्टिसहस्रनागा, भवन्त्ववार्या भुवि कामचाराः।
यज्ञावनीशानदिशाप्रदत्त, सुधोपमानांजलिपूर्णवार्भिः।।७।।

ॐ ह्रीं क्रों षष्टिसहस्रसंख्येभ्यो नागेभ्यः स्वाहा। इदमर्घ्यं..।

(नागसंतर्पण हेतु ईशान दिशा में जलांजलि देवें)

दर्भस्थापनविधि

ब्रह्मप्रदेशे निदधामि पूर्वं, पूर्वादिकाष्ठासु पुनः क्रमेण।
दर्भं जगद्गर्भजिनेन्द्रयज्ञ-विघ्नौघविध्वंसकृते समंत्रम्।।८।।

प्रकृतक्रमविध्यवधानाय पुष्पांजलिः।। (पुष्पांजलि क्षेपण करें)

परमब्रह्मभूयाप्तपरमाप्तजिनक्रतौ ।
ब्रह्मस्थाने स्थितं कुर्वे, दर्भं विघ्नोपशान्तये।।१।।

ॐ ह्रीं दर्पमथनाय नमः स्वाहा ।। *ब्रह्मदर्भः*।। (ब्रह्मस्थान में दर्भ स्थापना करें)

ॐ सर्वज्ञस्य यज्ञेशो, यज्ञेऽस्मिन्निदधे कुशम्।
शतयज्ञहरिद्भागे, यज्ञविघ्नविदारणम्।।२।।

ॐ ह्रीं अनंतज्ञानाय अनंतदर्शनाय अनंतवीर्याय अनंतसुखाय पूर्वदिङ्मुखे दर्भमवस्थापयामि नमः स्वाहा। *इंद्रदर्भः*।। (पूर्व दिशा में दर्भ स्थापित करें)

ॐ विश्वदोषसंप्लुष्टाद्यागे वैश्वानरात्मनः ।
वैश्वानरहरिद्भागे, कुशखंडं निवेशये।।३।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मणे स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । जिनाय स्वाहा । जिनोत्तमाय स्वाहा। धवाय स्वाहा । धवोत्तमाय स्वाहा। शुचिष्ठाशुचिष्ठेषु । कोणाकोणेषु । आग्नेय्यां दिशि दर्भमवस्थापयामि स्वाहा । *अग्निदर्भः* ।। (आग्नेयदिशा में डाभ स्थापित करना)

ॐ वैवस्वतमहामूर्ते, वैवस्वत्कोटिदीधितेः।
यागे वैवस्वताशायां, दर्भखंडं विदध्महे।।४।।

ॐ ह्रीं अनंतवीर्याय ।जितेन्द्रियाय । दक्षिणस्यां दिशि दर्भमवस्थापयामि स्वाहा ।। *यमदर्भः* ।। (दक्षिण दिशा में दर्भ स्थापित करना)

ॐ क्षमामयक्षमामूर्तेः, पुण्यराशेर्महामहे।
पुण्ये पुण्यजनाशायां, दर्भन्यासं विदध्महे।।५।।

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे नैऋत्यां दिशि दर्भमवस्थापयामि स्वाहा ।। *नैऋत्यदर्भः* ।। (नैऋत दिशा में दर्भ स्थापित करना)

ॐ विघ्नशांतये शांतेरपांमूर्तिमतः क्रतौ।
अपांपत्युस्तनोम्याशां, पवित्रेण पवित्रिताम्।।६।।

ॐ ह्रीं परममंगलाय परमपवित्राय परमनिर्वाणकारणाय । अपरस्यां दिशि दर्भमवस्थापयामि स्वाहा । *वरुणदर्भः* ।। (पश्चिम दिशा में दर्भ स्थापित करना)

ॐ निःसंगस्वरूपस्य, यागेस्मिन्मारुतात्मनः।
मारुतस्य ककुब्भागे, कुशमास्थापयामहे।।७।।

ॐ ह्रीं पंचमहाकल्याणसंपूर्णाय । वायव्यां दिशि दर्भमवस्थापयामि स्वाहा ।। *वायुदर्भः* ।। (वायव्य दिशा में दर्भ स्थापना करना)

ॐ सर्वसौम्यरूपस्य, सोममूर्तेर्महामहे।
सोममौलिसुहृत्काष्ठां कुशोऽयमधितिष्ठतु।।८।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यनाथाय त्रिलोकमहिताय शुचिरत्नत्रयदर्शनकराय । उत्तरस्यां दिशि दर्भमवस्थापयामि स्वाहा।। *यक्षदर्भः।।* (उत्तर दिशा में दर्भ स्थापित करना)

ॐ निर्लेपस्य जिनेन्द्रस्य, व्योममूर्तेर्महाध्वरे।
व्योमकेशस्य दिग्भागे, कुर्महे दर्भगर्भितम्।। ९ ।।

ॐ ह्रीं नवकेवललब्धिसहिताय देवाधिदेवाय । ऐशान्यां दिशि दर्भमवस्थापयामि स्वाहा ।। (ईशान दिशा में दर्भ स्थापित करना)

इति दर्भस्थापनविधानम् ।। (दर्भस्थापना विधिपूर्ण हुई)

अथ कुमुदादिद्वारपालानुकूलनम्

(कुमुद आदि चार द्वारपालों को अनुकूल करें—अर्घ्य चढ़ावें)

रक्षार्थमस्य पूर्वादि-द्वारदक्षिणभागके।
कुमुदं चांजनं यक्ष्ये, वामनं पुष्पदन्तकम्।।१।।

तोरणोपांतापसव्यदेशेषु कुंकुमाक्तपुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।। (पुष्पांजलि क्षेपण करें)

कुंभं शुंभंतमुच्चैर्धवलितमभितः सर्वधान्यांकुराद्यैः।
पंचास्यैः स्वस्तिकस्थं सततमभिमुखं लीलया लोकयन्तम्।।
बिभ्राणं हेमदंडं मरकतखचितं, कांतियुक्तं कदल्याः ।
पूर्वद्वाराधिकारं कुमुदमतिमुदं कुर्महे पूजनेन।।२।।

ॐ ह्रीं कुमुदप्रतीहार! निजद्वारि तिष्ठ तिष्ठ इदं अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा। (पुष्पांजलि क्षेपण कर अर्घ्य चढ़ावें)

कुंभं शुंभंतमुच्चैर्धवलितमभितः सर्वधान्यांकुराद्यैः।
पंचास्यैः स्वस्तिकस्थं सततमभिमुखं लीलया लोकयन्तम्।।
बिभ्राणं हेमदंडं मरकतखचितं, कांतियुक्तं कदल्याः।
कुर्वेऽपाग्द्वारपालं बलिविहितमुदं सांजनाभांजन त्वाम्।।३।।

ॐ ह्रीं अंजनप्रतीहार! निजद्वारि तिष्ठ तिष्ठ इदं अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा ।

कुंभं शुंभंतमुच्चैर्धवलितमभितः सर्वधान्यांकुराद्यैः।
पंचास्यैः स्वस्तिकस्थं सततमभिमुखं लीलया लोकयन्तम्।।
बिभ्राणं हेमदंडं मरकतखचितं, कांतियुक्तं कदल्याः।
प्रत्यग्द्वाराधिकारं, विधुधवलरुचं वामनं मानयामि।।४।।

ॐ ह्रीं वामनप्रतीहार! निजद्वारि तिष्ठ तिष्ठ इदं अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा ।

कुंभं शुंभंतमुच्चैर्धवलितमभितः सर्वधान्यांकुराद्यैः।
पंचास्यैः स्वस्तिकस्थं सततमभिमुखं लीलया लोकयन्तम्।।
बिभ्राणं हेमदंडं मरकतखचितं, कांतियुक्तं कदल्याः ।
लब्धोदग्द्वारदक्षं विधिविहितबलिं पुष्पदंतं तनोमि ।।५।।

ॐ ह्रीं पुष्पदंतप्रतीहार! निजद्वारि तिष्ठ तिष्ठ इदं अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा ।

इति मंडपप्रतिष्ठाविधानम् ।। (मंडपप्रतिष्ठाविधिपूर्ण हुई)

(ॐ) आभिः पुण्याभिरद्भिः परिमलबहुलेनामुना चंदनेन।
श्रीदृक्पेयैरमीभिः शुचिसदकचयैरुद्गमैरेभिरुद्धः।।
हृद्यैरेभिर्निवेद्यैर्मखभवनमिमैर्दीपयद्भिः प्रदीपैः।
धूपैः प्रायोभिरेभिः पृथुभिरपि फलैरेभिरर्चामि भूमिम्।।२।।

ॐ ह्रीं नीरजसे नमः जलं।
ॐ ह्रीं शीलगंधाय नमः चंदनं।
ॐ ह्रीं अक्षताय नमः अक्षतं।
ॐ ह्रीं विमलाय नमः पुष्पं।
ॐ ह्रीं दर्पमथनाय नमः नैवेद्यं।
ॐ ह्रीं ज्ञानोद्योताय नमः दीपं।
ॐ ह्रीं श्रुतधूपाय नमः धूपं।
ॐ ह्रीं परमसिद्धाय नमः फलं।
ॐ ह्रीं भूर्भूमिदेवतायै भूम्यर्चनं करोमि स्वाहा, अर्घं।

वास्तु विधान के मण्डल पर करने की विधि

वेद्यां मंडलमालिखार्चितसितैश्चूर्णैः सिताकल्पभृत्।
नागाधीशधनेशपीतवसना-लंकारपीतैश्च तैः।।
नीलैर्नीरजनीलवेष सुमनो, रक्ताभरक्तैस्ततो।
रक्ताकल्पककृष्णमेघविलसन्-कृष्णैश्च कृष्णप्रभ।।१।।

पंचचूर्णस्थापनम्।। (मंडल पर पंचचूर्ण की स्थापना करें)

सन्मंगलस्यास्य कृते कृतस्य, कोणेषु बाह्यक्षितिमंडलस्य।
वज्राणि चत्वारि च वज्रपाणिन्, वज्रस्य चूर्णेन लिखाद्य वेद्याम्२॥।

इति वज्रस्थापनम्।। (मंडल के चारों कोनों पर हीरा स्थापित करें)

अथ पुष्पांजलिपुरःसरं ब्रह्मादिवास्तुदेवतानां पृथगिष्टिः।

(अब ब्रह्म आदि वास्तुदेवों की पुष्पांजलिपूर्वक पृथक्-पृथक् पूजा करें)

(जिनपूजा में भव्यों को विघ्न नहीं आवें इसलिए वास्तुदेव पूजन के प्रारंभ में पुष्पांजलि क्षेपण करें)

श्रीमज्जैनमहामहोत्सवविधि-व्यापारसंसिद्धये।
भव्यानामपि तं नियोगनिचय-श्रद्धापरीतात्मनाम्।।
क्षेमार्थं क्रियमाणवस्तुदिविषत्-संघातसंपूजन-
प्रस्तावे प्रविकीर्यते जयजया-रावेण पुष्पांजलिः।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्षीं भूः स्वाहा।। पुष्पांजलिः।

ॐ णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।।

ह्रौं सर्वशान्तिं कुरुत कुरुत स्वाहा।।१।।

ॐ ह्रीं अक्षीणमहानसर्द्धिभ्यो नमः स्वाहा।।२।।

ॐ ह्रीं अक्षीणमहालयर्द्धिभ्यो नमः स्वाहा।।३।।

ॐ ह्रीं दशदिशतः आगतविघ्नान् निवारय निवारय सर्वं रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।।४।।

ॐ ह्रीं दुर्मुहूर्तदुःशकुनादिकृतोपद्रवशांतिं कुरु कुरु स्वाहा।।५।।

ॐ ह्रीं वास्तुदेवेभ्यः स्वाहा।।६।।

ॐ ह्रीं परकृतमंत्रतंत्रडाकिनीशाकिनीभूतपिशाचादिकृतोपद्रवशांतिं कुरु कुरु स्वाहा।।७।।

ॐ ह्रीं सर्वविघ्नोपशान्तिं कुरुत कुरुत स्वाहा।।८।।

ॐ ह्रीं सर्वत्र क्षेमं आरोग्यतां विस्तारय विस्तारय सर्व हृष्ट-पुष्टं प्रसन्नचित्तं कुरु कुरु स्वाहा।।९।।

ॐ ह्रीं यजमानादीनां सर्वसंघस्य शान्तिं तुष्टिं पुष्टिं ऋद्धिं वृद्धिं समृद्धिं अक्षीणर्द्धिपुत्रपौत्रादिवृद्धिं आयुवृद्धिं धनधान्यसमृद्धिं कुरुत कुरुत स्वाहा।।१०।।

ॐ ह्रीं क्रौं आं अनुत्पन्नानां द्रव्याणामुत्पादकाय, उत्पन्नानां द्रव्याणां वृद्धिकराय चिन्तामणिपार्श्वनाथ वसुदाय नमः स्वाहा।।११।। अर्घ्य चढ़ावें।

श्री वास्तु विधान पूजा

—स्थापना (शंभु छंद)—

अरिहन्त सिद्ध को वन्दन कर, जिनराज चरण का ध्यान करूँ।
भौतिक आध्यात्मिक सुख हेतु, नव देवों का गुणगान करूँ।।
कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्यालय को, सादर विनत प्रणाम करूँ।
जिनशासन रक्षक देव तथा, सब वास्तुदेव आह्वान करूँ।।१।।

—दोहा—

मंदिर महल मकान का, वास्तु रहे सुखकार।
स्वस्थ सुखी हों भक्तजन, रहे सुखी संसार।।१।।

ॐ ह्रीं अरिहन्तसिद्धादिनवदेवता कृत्रिमाकृत्रिमचैत्यालयादिरक्षकसमस्तवास्तुदेवाः! अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अरिहन्तसिद्धादिनवदेवता कृत्रिमाकृत्रिमचैत्यालयादिरक्षकसमस्तवास्तुदेवाः! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अरिहन्तसिद्धादिनवदेवता कृत्रिमाकृत्रिमचैत्यालयादिरक्षकसमस्तवास्तुदेवाः! अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् सन्निधीकरणं।

—अष्टक (शंभु छंद)—

गंगा के निर्मल जल से भावों को अति निर्मल करना है।
निज आत्मशुद्धि गृहशुद्धि हेतु, जिनपद में धारा करना है।।
त्रैलोक्यवर्ति सब चैत्यालय के, रक्षक वास्तुदेव आओ।
अपना स्थान ग्रहण करके, सबको भी सुखमय कर जाओ।।१।।

ॐ ह्रीं अरिहन्तसिद्धादि नवदेवताकृत्रिमाकृत्रिमचैत्यालयादिरक्षकसमस्तवास्तुदेवाः! इदं जलं गृण्हीध्वं गृण्हीध्वं स्वाहा।

अति सुरभित शीतल चन्दन से, भावों को सुरभित करना है।
निज आत्मशुद्धि हेतू जिनपद में, चंदन चर्चित करना है।।
त्रैलोक्यवर्ति सब चैत्यालय के, रक्षक वास्तुदेव आओ।
अपना स्थान ग्रहण करके, सबको भी सुखमय कर जाओ।।२।।

ॐ ह्रीं अरिहन्तसिद्धादि नवदेवताकृत्रिमाकृत्रिमचैत्यालयादिरक्षकसमस्तवास्तुदेवाः! इदं गंधं गृण्हीध्वं गृण्हीध्वं स्वाहा।

अति शुभ्र धवल अक्षत लेकर, भावों को अक्षय करना है।
निज आत्मशुद्धि गृहशुद्धि हेतु, अक्षतपुंजों को धरना है।।
त्रैलोक्यवर्ति सब चैत्यालय के, रक्षक वास्तुदेव आओ।
अपना स्थान ग्रहण करके, सबको भी सुखमय कर जाओ।।३।।

ॐ ह्रीं अरिहन्तसिद्धादि नवदेवताकृत्रिमाकृत्रिमचैत्यालयादिरक्षकसमस्तवास्तुदेवाः! इदं अक्षतं गृण्हीध्वं गृण्हीध्वं स्वाहा।

सुरभित पुष्पों का थाल सजा, निज भावों को महकाना है।
निज आत्मशुद्धि गृहशुद्धि हेतु, जिनपद में पुष्प चढ़ाना है।।
त्रैलोक्यवर्ति सब चैत्यालय के, रक्षक वास्तुदेव आओ।
अपना स्थान ग्रहण करके, सबको भी सुखमय कर जाओ।।४।।

ॐ ह्रीं अरिहन्तसिद्धादि नवदेवताकृत्रिमाकृत्रिमचैत्यालयादिरक्षकसमस्तवास्तुदेवाः! इदं पुष्पं गृण्हीध्वं गृण्हीध्वं स्वाहा।

लड्डू पेड़ा पकवानों से, निज मन को पुष्ट बनाना है।
निज आत्मशुद्धि गृहशुद्धि हेतु, जिनपद नैवेद्य चढ़ाना है।।
त्रैलोक्यवर्ति सब चैत्यालय के, रक्षक वास्तुदेव आओ।
अपना स्थान ग्रहण करके, सबको भी सुखमय कर जाओ।।५।।

ॐ ह्रीं अरिहन्तसिद्धादि नवदेवताकृत्रिमाकृत्रिमचैत्यालयादिरक्षकसमस्तवास्तुदेवाः! इदं नैवेद्यं गृण्हीध्वं गृण्हीध्वं स्वाहा।

घी का जगमग शुभ दीप जला, मन में उजियारा करना है।
निज आत्मशुद्धि गृहशुद्धि हेतु जिनवर की आरति करना है।।
त्रैलोक्यवर्ति सब चैत्यालय के, रक्षक वास्तुदेव आओ।
अपना स्थान ग्रहण करके, सबको भी सुखमय कर जाओ।।६।।

ॐ ह्रीं अरिहन्तसिद्धादि नवदेवताकृत्रिमाकृत्रिमचैत्यालयादिरक्षकसमस्तवास्तुदेवाः! इदं दीपं गृण्हीध्वं गृण्हीध्वं स्वाहा।

सुरभित मलयागिरि धूप जला, निज हृदय सुगंधित करना है।
निज आत्मशुद्धि गृहशुद्धि हेतु, अब धूप प्रज्वलित करना है।।

त्रैलोक्यवर्ति सब चैत्यालय के, रक्षक वास्तुदेव आओ।
अपना स्थान ग्रहण करके, सबको भी सुखमय कर जाओ।।७।।

ॐ ह्रीं अरिहन्तसिद्धादि नवदेवताकृत्रिमाकृत्रिमचैत्यालयादिरक्षकसमस्तवास्तुदेवाः! इदं धूपं गृण्हीध्वं गृण्हीध्वं स्वाहा।

अंगूर सेव बादाम आदि, फल से इच्छित फल वरना है।
निज आत्मशुद्धि गृहशुद्धि हेतु प्रभु को फल अर्पित करना है।।
त्रैलोक्यवर्ति सब चैत्यालय के, रक्षक वास्तुदेव आओ।
अपना स्थान ग्रहण करके, सबको भी सुखमय कर जाओ।।८।।

ॐ ह्रीं अरिहन्तसिद्धादि नवदेवताकृत्रिमाकृत्रिमचैत्यालयादिरक्षकसमस्तवास्तुदेवाः! इदं फलं गृण्हीध्वं गृण्हीध्वं स्वाहा।

ले अष्टद्रव्य ''चन्दनामती'', आतमगुण वृद्धी करना है।
निज आत्मशुद्धि गृहशुद्धि हेतु अब अर्घ्य समर्पित करना है।।
त्रैलोक्यवर्ति सब चैत्यालय के, रक्षक वास्तुदेव आओ।
अपना स्थान ग्रहण करके, सबको भी सुखमय कर जाओ।।९।।

ॐ ह्रीं अरिहन्तसिद्धादि नवदेवताकृत्रिमाकृत्रिमचैत्यालयादिरक्षकसमस्तवास्तुदेवाः! इदं अर्घ्यं गृण्हीध्वं गृण्हीध्वं स्वाहा।

मण्डल पर दशों दिशाओं में दश दिक्पालों की स्थापना

वास्तुदेव सब धर्मप्रिय, आओ हर्षित होय।
विघ्नशांति के हेतु मैं, पुष्प समर्पूं तोय।।

ॐ ह्रीं श्रीं भूः स्वाहा मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(मण्डल पर पूर्व दिशा में पुष्पांजलि करके अर्घ्य चढ़ावें)

शचि इन्द्राणी के साथ स्वर्ग से, ऐरावत पर आते हो।
वज्रायुध लेकर सभी विघ्न, संकट को दूर भगाते हो।।
हे इन्द्र नाम दिक्पाल देव! यह अष्टद्रव्य स्वीकार करो।
मेरे परिजन को करो सुखी, कर्तव्य समझ निज कार्य करो।।१।।

ॐ आं क्रौं ह्रींहे इन्द्रदेव! अत्रागच्छ आगच्छ तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्वाहा पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

इदमर्घ्यं पाद्यं, जलं, गन्धं, पुष्पं, दीपं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य चढ़ावें)

(मण्डल पर आग्नेय कोण में पुष्पांजलि करके अर्घ्य चढ़ावें)

अग्नी ज्वाला के रूप में निज, वैक्रियिक काय को धरते हो।
दुग्धादिक सामग्री द्वारा, पूजित हो निज गृह बसते हो।।
हे अग्निकुमर दिक्पाल देव! यह अष्टद्रव्य स्वीकार करो।
मेरे परिजन को करो सुखी, कर्तव्य समझ निज कार्य करो।।२।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे अग्निदेव! अत्र आगच्छ आगच्छ तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्वाहा पुष्पांजलिं क्षिपेत्। इदमर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य चढ़ावें)

(मण्डल पर दक्षिण दिशा में पुष्पांजलि करके अर्घ्य चढ़ावें)

भैंसा वाहन से सहित दण्ड, आयुध को धारण करते हो।
तिल आदिक सामग्री द्वारा, पूजित हो निजगृह बसते हो।।
यम नाम धारि दिक्पाल देव! यह अष्ट द्रव्य स्वीकार करो।
मेरे परिजन को करो सुखी, कर्तव्य समझ निज कार्य करो।।३।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे यम देव! अत्र आगच्छ आगच्छ तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्वाहा पुष्पांजलिं क्षिपेत्। इदमर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य चढ़ावें)

(मण्डल पर नैऋत्य दिशा में पुष्पांजलि करके अर्घ्य चढ़ावें)

नैऋत्य दिशा के वासी मुद्गर, शस्त्र को धारण करते हो।
तैलादिक सामग्री से पूजित, हो निज गृह में बसते हो।।
नैऋत्य नाम दिक्पाल देव! यह अष्ट द्रव्य स्वीकार करो।
मेरे परिजन को करो सुखी, कर्तव्य समझ निज कार्य करो।।४।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे नैऋत्य कुमार देव! अत्र आगच्छ आगच्छ तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्वाहा पुष्पांजलिं क्षिपेत्। इदं अर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य चढ़ावें)

(मण्डल पर पश्चिम दिशा में पुष्पांजलि करके अर्घ्य चढ़ावें)

पश्चिम दिश वासी मुद्गर आदिक, शस्त्र को धारण करते हो।
क्षीरान्न आदि सामग्री से, पूजित हो निज गृह बसते हो।।
हे वरुण नाम दिक्पाल देव! यह अष्ट द्रव्य स्वीकार करो।
मेरे परिजन को करो सुखी, कर्तव्य समझ निज कार्य करो।।५।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे वरुण देव! अत्र आगच्छ आगच्छ पुष्पांजलिं क्षिपेत्। इदं अर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य चढ़ावें)

(मण्डल पर वायव्य दिशा में पुष्पांजलि करके अर्घ्य चढ़ावें)

वायव्य दिशा के वासी नाना-आयुध धारण करते हो।
अन्नादि पिण्ड सामग्री से, पूजित हो निजगृह बसते हो।।
हे पवन नाम दिक्पाल देव! यह अष्ट द्रव्य स्वीकार करो।
मेरे परिजन को करो सुखी, कर्तव्य समझ निज कार्य करो।।६।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे वायुकुमार देव! अत्र आगच्छ आगच्छ पुष्पांजलिं क्षिपेत्। इदं अर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य चढ़ावें)

(मण्डल पर उत्तर दिशा में पुष्पांजलि करके अर्घ्य चढ़ावें)

उत्तरदिश के स्वामी कुबेर, रत्नादि पुष्प को धरते हो।
क्षीरान्न पात्र से पूजित हो, निज भवन में सुख से रहते हो।।
दिक्पाल देव हे धनकुबेर! यह अष्ट द्रव्य स्वीकार करो।
मेरे परिजन को करो सुखी, कर्तव्य समझ निज कार्य करो।।७।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे कुबेर देव! अत्र आगच्छ आगच्छ पुष्पांजलिं क्षिपेत्। इदं अर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य चढ़ावें)

(मण्डल पर ईशान दिशा में पुष्पांजलि करके अर्घ्य चढ़ावें)

ईशान दिशा वासी त्रिशूल को, कर में धारण करते हो।
घृतयुत दुग्धान्नो से पूजित, निज गृह में सुख से रहते हो।।

ईशान नाम दिक्पाल देव! यह अष्ट द्रव्य स्वीकार करो।
मेरे परिजन को करो सुखी, कर्तव्य समझ निज कार्य करो।।८।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे ईशान देव! अत्र आगच्छ आगच्छ पुष्पांजलिं क्षिपेत्। इदं अर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य चढ़ावें)

(मण्डल पर पूर्व और उत्तर दिशा के मध्य में पुष्पांजलि करके अर्घ्य चढ़ावें)

पाताललोक के वासी कर में, विविध शस्त्र को धरते हो।
नाना पक्वान्नों से पूजित, निज गृह में सुख से रहते हो।।
धरणेन्द्र नाम दिक्पाल देव! यह अष्ट द्रव्य स्वीकार करो।
मेरे परिजन को करो सुखी, कर्तव्य समझ निज कार्य करो।।९।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे धरणेन्द्र देव! अत्र आगच्छ आगच्छ पुष्पांजलिं क्षिपेत्। इदं अर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहेप्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य चढ़ावें)

(मण्डल पर पश्चिम और वायव्य दिशा के मध्य में पुष्पांजलि करके अर्घ्य चढ़ावें)

तुम ऊर्ध्व दिशा के वासी कर में, विविध शस्त्र को धरते हो।
नाना पक्वान्नों से पूजित, निजगृह में सुख से रहते हो।।
तुम सोम नाम दिक्पाल देव! यह अष्ट द्रव्य स्वीकार करो।
मेरे परिजन को करो सुखी, कर्तव्य समझ निज कार्य करो।।१०।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे सोम देव! अत्र आगच्छ आगच्छ पुष्पांजलिं क्षिपेत्। इदं अर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य चढ़ावें)

(मण्डल पर वास्तुदेवों को विविध पकवानों से सहित अर्घ्य समर्पित करें)

-शार्दूलविक्रीडित छंद-

ॐ- ग्रामक्षेत्रगृहादिभेदविविधो-र्वाभागमध्याश्रय-
स्तत्तद्भागपरिच्छिदा बहुविध-स्वात्मप्रदेशो विभुः।
ब्रह्मा दिक्पतिपूर्वदेवनिकरै-रात्मोन्मुखैर्वेष्टितो,
लाजाज्यान्वितदुग्धभक्तमधुना, गृण्हातु रक्तप्रभः।।१।।

-दोहा-

वास्तुदेव हे ब्रह्म जी, करो वास्तु मम शुद्ध।
सुखी रहें यजमान सब, होवे शांति समृद्धि।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं रक्तवर्णे सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधू चिन्ह सपरिवार हे ब्रह्मन्! अत्र आगच्छ-आगच्छ, स्वस्थाने तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्वाहा।

ॐ ह्रीं ब्रह्मणे स्वाहा, ब्रह्म परिजनाय स्वाहा, ब्रह्म अनुचराय नमः, वरुणाय नमः, सोमाय स्वाहा, प्रजापतये स्वाहा, ॐ स्वाहा, ॐ भूः स्वाहा, भुवः स्वाहा, भूर्भुवः स्वाहा, स्वः स्वाहा, स्वधा स्वाहा, हे ब्रह्मन्! इदमर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं यज्ञ भागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

(शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

नोट—अर्घ्य के साथ चावल की धानी, घी, शक्कर, खीर और तगर चढ़ाएँ इस प्रकार आगे भी जिस-जिस देव के जो-जो भक्ष्य पदार्थ हैं, उन्हें उनके कोठों पर अर्घ्य के साथ चढ़ाएँ। इस प्रकार ४९ कोठों पर ही चढ़ाएँ।

-उपजाति छंद-

ॐ-ऐरावतस्कंधमधिश्रयन्तं, वज्रायुधं रुच्यशचीसमेतम्।
प्रत्यूहविध्वंसकमर्हदिष्टौ, कुष्टप्रसूनैः प्रयजामि शक्रम्।।२।।

-दोहा-

वास्तुदेव हे इन्द्र जी, करो वास्तु मम शुद्ध।
सुखी रहें यजमान सब, होवे शांति समृद्धि।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं रक्तवर्णे सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधू चिन्ह सपरिवार हे इन्द्रदेव! अत्रागच्छ अत्रागच्छ तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्वाहा। (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

ॐ ह्रीं इन्द्राय स्वाहा, इन्द्र परिजनाय स्वाहा, इन्द्र अनुचराय स्वाहा, वरुणाय स्वाहा, सोमाय स्वाहा, प्रजापतये स्वाहा, ॐ स्वाहा, ॐ भूः स्वाहा, भुवः स्वाहा, भूर्भुवः स्वाहा, स्वः स्वाहा, स्वधा स्वाहा, हे इन्द्र देव! इदमर्घ्यं पाद्यं, जलं, गन्धं, पुष्पं, दीपं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य के साथ कोष्ट, उपलेट, फूल चढ़ाएँ)

ांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्

ॐ-ज्वालाकलापात्मकशक्तिहस्तो, बस्ताधिरूढः सुपरिष्कृतांगः।
स्वाहामहिष्या सममग्निदेवः, प्रीणातु दुग्धैस्तगरैस्तराज्यैः।।३।।

-दोहा-

वास्तुदेव अग्नी कुमर, करो वास्तु मम शुद्ध।
सुखी रहें यजमान सब, होवे शांति समृद्धि।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं रक्तवर्णे सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधू चिन्ह सपरिवार हे अग्निदेव! अत्र आगच्छ आगच्छ स्वस्थाने तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्वाहा। (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

हे अग्नि देव! इदमर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य के साथ दूध, घी, तगर चढ़ाएँ)

ाांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्

ॐ-छायासमेतं महिषाधिरूढं, दंडायुधं दंडितवैरिवर्गम्।
वैवस्वतं विघ्नहरं तिलान्नैः, सिंबान्ययुक्तैः परितर्पयामि।।४।।

-दोहा-

वास्तुदेव यमदेव जी, करो वास्तु मम शुद्ध।
सुखी रहें यजमान सब, होवे शांति समृद्धि।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं रक्तवर्णे सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधू चिन्ह सपरिवार हे यम देव! अत्र आगच्छ आगच्छ स्वस्थाने तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्वाहा। (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

हे यम देव! इदमर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य के साथ तिल का चूर्ण, तुअर का बाकरा चढ़ाएँ।)

ाांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्

ॐ-नैऋत्यदेशो निऋतिः सुरुक्ष-मृक्षांगवाहद्विषदास्यरक्षः।
आरूढवानुद्गतमुद्गरास्त्रः, पिण्याकमायच्छतु तैलमिश्रम्।।५।।

-दोहा-

वास्तुदेव नैऋत्य जी, करो वास्तु मम शुद्ध।
सुखी रहें यजमान सब, होवे शांति समृद्धि।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं नैऋत्य कुमार देव! अत्र आगच्छ आगच्छ पुष्पांजलिं क्षिपेत्। इदं अर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य के साथ तिल का तेल, तिल पापड़ी चढ़ाएँ।)

ाांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्

ॐ करघृतफणिपाशो मंडनोद्योतिताशः, करिमकरकमूर्तिर्लोकसंक्रांतकीर्तिः।
सुरुचिरवरुणानीप्राणनाथः सयूथो, वरुण इह समेतो लातु दुग्धान्नधान्यम्।।६

-दोहा-

वास्तुदेव हे वरुण जी, करो वास्तु मम शुद्ध।
सुखी रहें यजमान सब, होवे शांति समृद्धि।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे वरुण देव! अत्र आगच्छ आगच्छ पुष्पांजलिं क्षिपेत् इदं अर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य के साथ धाणी, दूध पाक, (रबड़ी) खीर चढ़ाएँ।)

ाांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्

ॐ-उर्वीरुहोर्वायुधशस्तहस्त-मर्वाधिरूढं परिमंडितांगम्।
तद्वायुवेगीमुखदत्तदृष्टिं, पिष्टैर्निशायाः पवनं यजामि।।७।।

-दोहा-

वास्तुदेव वायूकुमर, करो वास्तु मम शुद्ध।
सुखी रहें यजमान सब, होवे शांति समृद्धि।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं वायुकुमार देव! अत्र आगच्छ आगच्छ पुष्पांजलिं क्षिपेत् इदं अर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य के साथ पिसी हल्दी चढ़ाएँ।)

ाांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्

सद्रत्नरुक्पुष्पितपुष्पकाभ्र-यानाधिरूढस्फुरितोग्रशक्तेः।
सजानियूथ्यव्रजयक्षराज, प्रत्तं मया स्वीकुरु पायसान्नम्।।८।।

-दोहा-

वास्तूदेव कुबेर जी, करो वास्तु मम शुद्ध।
सुखी रहें यजमान सब, होवे शांति समृद्धि।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे कुबेर देव! अत्र आगच्छ आगच्छ पुष्पांजलिं क्षिपेत् इदं अर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य के साथ दूध में मिलाया हुआ भात चढ़ाएँ।)

ाांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्

ॐ-उमासमेतो वृषभाधिरूढो, जटाकिरीटप्रणिभूषितांगः।
त्रिशूलहस्तः प्रमथाधिनाथो, गृण्हातु दुग्धान्नमिदं ससर्पिः।।९।।

-दोहा-

वास्तुदेव ईशान जी, करो वास्तु मम शुद्ध।
सुखी रहें यजमान सब, होवे शांति समृद्धि।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे ईशान देव! अत्र आगच्छ आगच्छ पुष्पांजलिं क्षिपेत् इदं अर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य के साथ घी, क्षीरान्न चढ़ाएँ।)

ाांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्

ॐ-वेधःपुरोदेशमवंतमार्यं, ध्वस्तात्मदेशप्रतिरोधिवीर्यम्।
सत्पूरिकामोदकपूरिकादि-र्भक्ष्यैः प्रहृष्टं विदधे फलैश्च।।१०।।

-दोहा-

आर्यदेव वास्तूकुमर, करो वास्तु मम शुद्ध।
सुखी रहें यजमान सब, होवे शांति समृद्धि।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे आर्य देव! अत्र आगच्छ आगच्छ पुष्पांजलिं क्षिपेत् इदं अर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य के साथ मैदा का घूंगरा और फल चढ़ाएँ।)

(शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्

ॐ-ब्रह्मापसव्यं पदमावसानो, भाभासमानो मुकुटादिभाभिः।
स्थामिष्यसंवीतभुजिष्यवर्गो, दीव्येत माषान्नतिलैर्विवस्वान्।।११।।

-दोहा-

वास्तुदेव विवस्वान जी, करो वास्तु मम शुद्ध।
सुखी रहें यजमान सब, होवे शांति समृद्धि।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे विवस्वानदेव! अत्र आगच्छ आगच्छ पुष्पांजलिं क्षिपेत् इदं अर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य के साथ उड़द की घूँगरी (बाकरा), तिल चढ़ाएँ।)

ाांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्

ॐ-शत्रुशक्तिविनिवारणक्षमो, मित्ररक्षणविधानदक्षिणः।
प्रत्यगीश इह मित्रनिर्जरः, स्वीकारोतु दधिदूर्विकामपि।।१२।।

-दोहा-

मित्रदेव वास्तूकुमर, करो वास्तु मम शुद्ध।
सुखी रहें यजमान सब, होवे शांति समृद्धि।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे मित्रदेव! अत्र आगच्छ आगच्छ पुष्पांजलिं क्षिपेत् इदं अर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य के साथ दही बड़ा, मैदा का भुजिया चढ़ाएँ।)

ाांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्

ॐ-प्रजापतेः सव्यसुधाशिभागे, महीमवंतं महिमानमाप्तम्।
महीधरं मंडनमंडितांगं, महामहस्कं महयामि दुग्धैः।।१३।।

-दोहा-

वास्तुदेव भूधरश्री, करो वास्तु मम शुद्ध।
सुखी रहें यजमान सब, होवे शांति समृद्धि।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे भूधरदेव! अत्र आगच्छ आगच्छ पुष्पांजलिं क्षिपेत् इदं अर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे

प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य के साथ दूध चढ़ाएँ।)

ाांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्

ॐ-सविंद्रदेवाय सविक्रमाय, तनूनपात्पक्षमुपाश्रिताय।
वनामरानीकपुरःसराय, ददामि पुंजीकृतधान्यलाजम्।।१४।।

-दोहा-

हे सविन्द्र वास्तूकुमर, करो वास्तु मम शुद्ध।
सुखी रहें यजमान सब, होवे शांति समृद्धि।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे सविन्द्र देव! अत्र आगच्छ आगच्छ पुष्पांजलिं क्षिपेत् इदं अर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य के साथ चावल की धाणी और धनिये की धाणी चढ़ाएँ।)

ाांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्

ॐ-वैश्वानरादित्यमुपाश्रिताय, साविंद्रदेवाय सविक्रमाय।।
कर्पूरकाश्मीरलवंगकुष्टै-रुपस्कृतं पुण्यजलं ददामि।।१५।।

-दोहा-

वास्तुदेव साविन्द्र जी, करो वास्तु मम शुद्ध।
सुखी रहें यजमान सब, होवे शांति समृद्धि।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे साविन्द्र देव! अत्र आगच्छ आगच्छ पुष्पांजलिं क्षिपेत् इदं अर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य के साथ कपूर, कश्मीर केशर, लवंग आदि सुगंधित द्रव्यों से मिश्रित जल चढ़ाएँ।)

ाांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्

ॐ-इंद्रं वनामर्त्यकदंबकेंद्रं, मंद्रारवं पुण्यजनस्य पक्षम्।
प्रत्यूहजालं विनिपातयंतं, मुद्गस्य चूर्णैः प्रयजे सपूपैः।।१६।।

-दोहा-

इन्द्रदेव वास्तूकुमर, करो वास्तु मम शुद्ध।
सुखी रहें यजमान सब, होवे शांति समृद्धि।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे इन्द्र देव! अत्र आगच्छ आगच्छ पुष्पांजलिं क्षिपेत् इदं अर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य के साथ मूँग का चूर्ण और फूल चढ़ाएँ।)

ाांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्

ॐ-इंद्रराजगततंद्रनिर्जितारातिवर्ग जिनवर्गपोषक।
कासराधिपतिपक्षमाश्रिताऽऽदेहि पूपयुतमुद्गचूर्णकम्।।१७।।

-दोहा-

वास्तुदेव हे इन्द्र जी, करो वास्तु मम शुद्ध।
सुखी रहें यजमान सब, होवे शांति समृद्धि।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे इन्द्र देव! अत्र आगच्छ आगच्छ पुष्पांजलिं क्षिपेत् इदं अर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य के साथ चावल के बड़े और मूँग का चूर्ण चढ़ाएँ।)

ाांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्

ॐ-समीराग्रभूमौ समुद्भासमानं, निजं देशभागं सदा पालयन्तम्।
यजे रुद्रमक्षुद्रवन्यामरेंद्र, गुडापूपवर्गैरुपस्कारयुक्तैः।।१८।।

-दोहा-

वास्तुदेव हे रुद्र जी, करो वास्तु मम शुद्ध।
सुखी रहें यजमान सब, होवे शांति समृद्धि।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे रुद्रदेव! अत्र आगच्छ आगच्छ पुष्पांजलिं क्षिपेत् इदं अर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य के साथ गुड़, मैदा का घूँगरा चढ़ाएँ।)

ाांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्

ॐ-रुद्रजयाख्यं परिमितरौद्र-क्षुद्रनिकायं वनसुरमुख्यम्।
मारुतनिघ्नं गुडपरिपुष्टैः, पिष्टकवर्गैरिह महयामि।।१९।।

-दोहा-

रुद्रराज वास्तूकुमर, करो वास्तु मम शुद्ध।
सुखी रहें यजमान सब, होवे शांति समृद्धि।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे रुद्रराज! अत्र आगच्छ आगच्छ पुष्पांजलिं क्षिपेत् इदं अर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य के साथ गुड़, चावल का आटा, अम्बोली (इमली) चढ़ाएँ।)

ाांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्

ॐ-आमोदमाप्नोति गुणाधिकेषु, विद्वेषमुद्वृत्तजनेषुश्च।
आपः सदेवो गुडपिष्टयुक्तं, सकैरवं शंखमुपैतु शैव।।२०।।

-दोहा-

आप्देव वास्तूकुमर, करो वास्तु मम शुद्ध।
सुखी रहें यजमान सब, होवे शांति समृद्धि।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे आप्देव! अत्र आगच्छ आगच्छ पुष्पांजलिं क्षिपेत् इदं अर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य के साथ गुड़, चावल का आटा, सफेद कमल, शंख, अम्बोली चढ़ाएँ।)

ाांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्

ॐ-धर्मानुरक्ताननुमोदमानं, पापानुषक्तानपसारयन्तम्।
महेश्वरायत्तमिहापवत्सं, संपूजयेयं बलिना तथैव।।२१।।

-दोहा-

आपवत्स वास्तूकुमर, करो वास्तु मम शुद्ध।
सुखी रहें यजमान सब, होवे शांति समृद्धि।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे आपवत्स देव! अत्र आगच्छ आगच्छ पुष्पांजलिं क्षिपेत् इदं अर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य के साथ गुड़, चावल का आटा, सफेद कमल, शंख, अम्बोली चढ़ाएँ।)

ाांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्

ॐ-पर्जन्य पर्जन्यनिनादतुल्य-नादेन दूरीकृतवैरिलोक।
स्वतर्जनीचालनतर्जितात्म-वाचाटभृत्याज्यमुपैहि रौद्र।।२२।।

-दोहा-

वास्तुदेव पर्जन्य जी, करो वास्तु मम शुद्ध।
सुखी रहें यजमान सब, होवे शांति समृद्धि।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पर्जन्य देव! अत्र आगच्छ आगच्छ पुष्पांजलिं क्षिपेत् इदं अर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य के साथ घी चढ़ाएँ।)

ाांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्

ॐ-जयं तनोति प्रतिरोधिरोधा-न्नयं तनोति स्वजनानुवृत्तेः।
योऽसौ जयंतो हरिदक्षिणस्थो, गृण्हातु पूतं नवनीतमेतत्।।२३।।

-दोहा-

हे जयन्त वास्तूकुमर, करो वास्तु मम शुद्ध।
सुखी रहें यजमान सब, होवे शांति समृद्धि।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे जयन्त देव! अत्र आगच्छ आगच्छ पुष्पांजलिं क्षिपेत् इदं अर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य के साथ ताजा मक्खन चढ़ाएँ।)

ाांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्

ॐ-संक्रंदनापष्टुपदेशितारं, तापप्रकाशप्रतिभासमानम्।
तमोपहं भास्करदेवमेतं, कुर्वे प्रहृष्टं मधुकंददानात्।।२४।।

-दोहा-

भास्करदेव प्रसिद्ध तुम, करो वास्तु मम शुद्ध।
सुखी रहें यजमान सब, होवे शांति समृद्धि।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे भास्करदेव! अत्र आगच्छ आगच्छ पुष्पांजलिं क्षिपेत् इदं अर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य के साथ गुड़ और सफेद फूल चढ़ाएँ।)

ाांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्

ॐ–सत्यामरं नित्यमसत्यदूरं, गोत्रद्विषद्धामपदे वसंतम्।
सद्धर्भनिध्यानकृतप्रमोदं, संपूजये पूर्वसपर्ययैव।।२५।।

–दोहा–

सत्यकाय हे देव तुम, करो वास्तु मम शुद्ध।
सुखी रहें यजमान सब, होवे शांति समृद्धि।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे सत्यकाय देव! अत्र आगच्छ आगच्छ पुष्पांजलिं क्षिपेत् इदं अर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य के साथ ताजा मक्खन चढ़ाएँ।)

ाांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्

ॐ–भृशं विवक्षुर्गुणशास्त्रसंघं, भृशं दिदृक्षुर्मुनिमुख्यसंगम्।
भृशामरः संश्रुतवृत्तशत्रू-रातु प्रमोदान्नवनीतपिंडम्।।२६।।

–दोहा–

हे भृषदेव प्रसिद्ध तुम, करो वास्तु मम शुद्ध।
सुखी रहें यजमान सब, होवे शांति समृद्धि।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे भृषदेव! अत्र आगच्छ आगच्छ पुष्पांजलिं क्षिपेत् इदं अर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य के साथ ताजा मक्खन का गोला चढ़ाएँ।)

ाांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्

ॐ–अथांतरिक्षो विहरन्विनोदं, वनेषु पश्यन्सुजनोपसर्गम्।
नुदन्बृहद्धानुसखोंतरिक्षश्चूर्णं निशामाषजमाददातु।।२७।।

–दोहा–

वास्तुदेव हे अन्तरिक्ष, करो वास्तु मम शुद्ध।
सुखी रहें यजमान सब, होवे शांति समृद्धि।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे अन्तरिक्ष देव! अत्र आगच्छ आगच्छ पुष्पांजलिं क्षिपेत् इदं अर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य के साथ हल्दी और उड़द का चूर्ण चढ़ाएँ।)

ाांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्

ॐ–पुष्णाति यः सज्जनतोपकारं, मुष्णातु चासज्जनदुर्विलासम्।
कृपीटयोनेः सुहृदेष पूषा, शिंबान्नमेतत्सपर्यः (त्सपर्यया) प्रतीच्छेत्।।२८।।

–दोहा–

पुच्छ देव तुम आयके, करो वास्तु मम शुद्ध।
सुखी रहें यजमान सब, होवे शांति समृद्धि।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पुच्छ देव! अत्र आगच्छ आगच्छ पुष्पांजलिं क्षिपेत् इदं अर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य के साथ तुअर के नैवेद्य व दूध चढ़ाएँ।)

ाांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्

ॐ–वितथाख्यं वितथीकृतारि-शक्तिप्रदनं साधुजनोपकारदक्षम्।
प्रथितं दंडधराख्यं वरकटावन्नसमर्चितं करोमि।।२९।।

–दोहा–

वितथदेव तुम आयके, करो वास्तु मम शुद्ध।
सुखी रहें यजमान सब, होवे शांति समृद्धि।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे वितथदेव! अत्र आगच्छ आगच्छ पुष्पांजलिं क्षिपेत् इदं अर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य के साथ सौंठ, काली मिर्च व पीपल चढ़ाएँ।)

ाांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्

ॐ–रक्षःपरीवारकसत्वरक्षा-दक्षे सुमार्गे विहितप्रमोदम्।
कलापसव्याश्रयराक्षसेंद्रं, मधुप्रदानात्सुखितो भव त्वम्।।३०।।

–दोहा–

राक्षसदेव प्रसिद्ध तुम, करो वास्तु मम शुद्ध।
सुखी रहें यजमान सब, होवे शांति समृद्धि।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे राक्षसदेव! अत्र आगच्छ आगच्छ पुष्पांजलिं क्षिपेत् इदं अर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे

प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य के साथ गुड़ चढ़ाएँ।)

ाांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्

ॐ - सगंधगंधर्वसुपर्वहस्त - प्रशस्तवीणानुगगानगीतं।
गंधर्वदेवं घनसारपूर्व - गंधैः समर्चे यममाश्रयन्तम्।।३१।।

-दोहा-

वास्तुदेव गंधर्व जी, करो वास्तु मम शुद्ध।
सुखी रहें यजमान सब, होवे शांति समृद्धि।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे गन्धर्व देव! अत्र आगच्छ आगच्छ पुष्पांजलिं क्षिपेत् इदं अर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य के साथ कपूर और सुगंधित जल चढ़ाएँ।)

ाांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्

ॐ-यो विक्रमाक्रांतजनप्रसंग-स्तपोधनाधीशपदाब्जभृंगः।
स भृंगराजः श्रितधर्मराजः, पवित्रदुग्धान्नमिदं ससर्पिः।।३२।।

-दोहा-

भृंगराज जी आयके, करो वास्तु मम शुद्ध।
सुखी रहें यजमान सब, होवे शांति समृद्धि।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे भृंगराज देव! अत्र आगच्छ आगच्छ पुष्पांजलिं क्षिपेत् इदं अर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य के साथ रबड़ी चढ़ाएँ।)

ाांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्

ॐ-मृषीकृताधर्मपरप्रभावं, मृषोक्तिदूरं मृषनामधेयम्।
रक्षोधिपायात्तमुदारशक्तिं, माषान्नसंतर्पितमातनोतु।।३३।।

-दोहा-

हे मृषदेव प्रसिद्ध तुम, करो वास्तु मम शुद्ध।
सुखी रहें यजमान सब, होवे शांति समृद्धि।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे मृष देव! अत्र आगच्छ आगच्छ पुष्पांजलिं क्षिपेत् इदं अर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य के साथ उड़द की घूंगरी चढ़ाएँ।)

ाांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्

ॐ-तपोधनाजन्यनिवारणार्थं, वनाश्रमद्वारि सदा निषण्णम्।
दौवारिकं सेवितयातुधानं, संतर्पयेऽहं वरशालिपिष्टैः।।३४।।

-दोहा-

हे दौवारिक देव तुम, करो वास्तु मम शुद्ध।
सुखी रहें यजमान सब, होवे शांति समृद्धि।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे दौवारिकदेव! अत्र आगच्छ आगच्छ पुष्पांजलिं क्षिपेत् इदं अर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य के साथ चावल का आटा चढ़ाएँ।)

ाांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्

ॐ-सुग्रीव यातानुतवीणया वै-गायन्नितांतं गुणिनां गुणौघम्।
सुग्रीवदेवः श्रितपाशहस्तः, प्रमोदवान्मोदकदानतोऽस्तु।।३५।।

-दोहा-

हे सुग्रीव प्रसिद्ध तुम, करो वास्तु मम शुद्ध।
सुखी रहें यजमान सब, होवे शांति समृद्धि।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे सुग्रीवदेव! अत्र आगच्छ आगच्छ पुष्पांजलिं क्षिपेत् इदं अर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य के साथ लड्डू चढ़ाएँ।)

ाांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्

ॐ-विभांति पुंसां गुणसंकथायां, पुष्पावदाताः खलु यस्य दंताः।
स पुष्पदंतो वरुणान्तिकस्थः, पुष्पाणि गृण्हातु जलान्वितानि।।३६।।

-दोहा-

वास्तुदेव हे पुष्पदन्त!, करो वास्तु मम शुद्ध।
सुखी रहें यजमान सब, होवे शांति समृद्धि।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पुष्पदंत देव! अत्र आगच्छ आगच्छ पुष्पांजलिं क्षिपेत् इदं अर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य के साथ फूल और जल चढ़ाएँ।)

ाांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्

ॐ-असुरः कल्पसुराभविक्रियो, गिरिनद्यादिविहारलोलुपः।
वरुणोपांतमहीमुपाश्रितो, भजतां लोहितमन्नमुत्तमम्।।३७।।

-दोहा-

वास्तुदेव हे असुर जी, करो वास्तु मम शुद्ध।
सुखी रहें यजमान सब, होवे शांति समृद्धि।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे असुरदेव! अत्र आगच्छ आगच्छ पुष्पांजलिं क्षिपेत् इदं अर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य के साथ लाल रंग का भात चढ़ाएँ।)

ाांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्

ॐ-संशुद्धमार्गप्रतिरोधिवाहिनी-शोषं सदा यः कुरुते प्रतापतः।
शोषः सपक्षीकृतयादसांपति-र्लातु प्रधौतं तिलमक्षतांश्च।।३८।।

-दोहा-

शोष देव तुम आयके, करो वास्तु मम शुद्ध।
सुखी रहें यजमान सब, होवे शांति समृद्धि।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे शोष देव! अत्र आगच्छ आगच्छ पुष्पांजलिं क्षिपेत् इदं अर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य के साथ तिल और अक्षत चढ़ाएँ।)

ाांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्

ॐ-रोगोपघातांगतपोधनानां, दृष्ट्वा स्थितिं तामनुकंप्यमानाम्।
रोगं मरुत्पक्षकृतानुरागं, सुखाकरोम्युत्तमकारिकाभिः।।३९।।

-दोहा-

रोगदेव तुम आयके, करो वास्तु मम शुद्ध।
सुखी रहें यजमान सब, होवे शांति समृद्धि।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे रोग देव! अत्र आगच्छ आगच्छ पुष्पांजलिं क्षिपेत् इदं अर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य के साथ गुड़ की मीठी पूड़ी चढ़ाएँ।)

ाांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्

ॐ-नागं समाराधितयोगिनागं, नागारिनादेन पलायितारम्।
वातापसव्याश्रयमाश्रयन्तं, मधुप्रदिग्धैर्महयामि लाजैः।।४०।।

-दोहा-

नागदेव सन्तुष्ट हो, करो वास्तु मम शुद्ध।
सुखी रहें यजमान सब, होवे शांति समृद्धि।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे नाग देव! अत्र आगच्छ आगच्छ पुष्पांजलिं क्षिपेत् इदं अर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य के साथ शक्कर पड़ा हुआ दूध और पका भात चढ़ाएँ।)

ाांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्

ॐ-मुख्यं यजे व्यंतरदेवमुख्यं, यक्षेण सत्रा कृतचारुमुख्यम्।
विख्यातकांतारविहारसक्तं, संतु प्रवेकैर्वरवस्तुयुक्तैः।।४१।।

-दोहा-

मुख्यदेव जी आएके, करो वास्तु मम शुद्ध।
सुखी रहें यजमान सब, होवे शांति समृद्धि।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे मुख्य देव! अत्र आगच्छ आगच्छ पुष्पांजलिं क्षिपेत् इदं अर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे

प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य के साथ श्रीखंड चढ़ाएँ।)

ाांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्

ॐ–भल्लाटदेवं प्रतिमल्लघट्ट–संघट्टनाविष्कृतसर्वशक्तिम्।
बीरं कुबेरं प्रबलं प्रतीतं, गुडान्नदानेन सुखाकरोमि।।४२।।

-दोहा-

वास्तुदेव भल्लाट जी, करो वास्तु मम शुद्ध।
सुखी रहें यजमान सब, होवे शांति समृद्धि।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे भल्लाट देव! अत्र आगच्छ आगच्छ पुष्पांजलिं क्षिपेत् इदं अर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य के साथ गुड़ और भात चढ़ाएँ।)

ाांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्

ॐ–मृगगणैस्तपसा वशीकृतै, मृगयते मुनिपन्नमनाय यः।
तमहमत्र मृगं धनदाश्रयं, परिचरामि गुडान्वितपूपकैः।।४३।।

-दोहा-

वास्तुदेव मृगदेव जी, करो वास्तु मम शुद्ध।
सुखी रहें यजमान सब, होवे शांति समृद्धि।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे मृगदेव! अत्र आगच्छ आगच्छ पुष्पांजलिं क्षिपेत् इदं अर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य के साथ गुड़ के मालपुआ चढ़ाएँ।)

ाांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्

ॐ–धनदवामधरातलभागभागदितिनंदनमुख्यसुरादृतः।
अदितिरद्धवनामरपूजितो मुदितवान्भवतादिह मोदकैः।।४४।।

-दोहा-

अदितिदेव तुम आयके, करो वास्तु मम शुद्ध।
सुखी रहें यजमान सब, होवे शांति समृद्धि।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे अदिति देव! अत्र आगच्छ आगच्छ पुष्पांजलिं क्षिपेत् इदं अर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्

प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य के साथ मोदक—लड्डू चढ़ाएँ।)

ाांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्

ॐ–मोचाफला यद्युदितिर्यदास्या–दधेति वाचा विनिवारणार्थम्।
मुमुक्षुसाक्षादुदितिः सुभुंजां, भक्षं तिरोपेतमुमापतीश।।४५।।

-दोहा-

उदिति देव सन्तुष्ट हो, करो वास्तु मम शुद्ध।
सुखी रहें यजमान सब, होवे शांति समृद्धि।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे उदितिदेव! अत्र आगच्छ आगच्छ पुष्पांजलिं क्षिपेत् इदं अर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य के साथ तिल पापड़ी चढ़ाएँ।)

ाांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्

ॐ–विचारि सत्कृत्यविनोदशक्ते, विचारियुक्ते सुजनानुरक्ते।
कृशानुबाह्यावनिभागभुक्त्यै, गृहाण भक्ष्यं लवणोपयुक्तम्।।४६।।

-दोहा-

हे विचार्य जी देव तुम, करो वास्तु मम शुद्ध।
सुखी रहें यजमान सब, होवे शांति समृद्धि।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे विचार्य देव! अत्र आगच्छ आगच्छ पुष्पांजलिं क्षिपेत् इदं अर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य के साथ नमक डला हुआ भात चढ़ाएँ।)

ाांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्

ॐ–कायेन वाचा मनसा पवित्र–मावर्जयंती तपसामधीशं।
रक्षोबहिःस्था तिलपिष्टभुक्त्या, संतुष्यतां संप्रति पूतनाख्या।।४७।।

-दोहा-

वास्तुदेव हे पूतना!, करो वास्तु मम शुद्ध।
सुखी रहें यजमान सब, होवे शांति समृद्धि।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पूतना देव! अत्र आगच्छ आगच्छ पुष्पांजलिं क्षिपेत् इदं अर्घ्यं

पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य के साथ तिल और भात चढ़ाएँ।)

ांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्

ॐ-पापान्महापूरुषकारिणो या, या राक्षसीरूपधरा ह्यतर्जत्।
सा मारुताशावनिबाह्यसंश्रिता, कुल्माषमायच्छतु पापराक्षसी।।४८।।

-दोहा-

पापराक्षसी देव तुम, करो वास्तु मम शुद्ध।
सुखी रहें यजमान सब, होवे शांति समृद्धि।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पापराक्षसी देव! अत्र आगच्छ आगच्छ पुष्पांजलिं क्षिपेत् इदं अर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहेप्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य के साथ उबाले हुए मूँग चढ़ाएँ।)

ांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्

ॐ-यत्र यत्र मुनयो वसंति ते, तत्र तत्र तदजन्यवारणे।
या चरत्यनिशमीशबाह्यतः, सा ददातु चरकी घृतं मधु।।४९।।

-दोहा-

चरकी देव प्रसिद्ध तुम, करो वास्तु मम शुद्ध।
सुखी रहें यजमान सब, होवे शांति समृद्धि।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे चरकी देव! अत्र आगच्छ आगच्छ पुष्पांजलिं क्षिपेत् इदं अर्घ्यं पाद्यं, जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहेप्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (अर्घ्य के साथ घी और गुड़ चढ़ाएँ।)

ांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्

-पूर्णार्घ्य (शार्दूलविक्रीडित छंद)-

ॐ-एते वास्तुसुराः समस्तधरणी-संवासिनोऽबाधिता-
प्रत्यूहस्य विधायिनस्तपचिताः प्रत्यूहसंहारकाः।।
अद्य प्रापितपूजनेन मुदिताः, सर्वप्रभावान्विताः।
यष्टुर्याजकभूपमंत्रिशुभवर्णानां च संतु श्रियै।।५०।।

शेर छंद- **सब वास्तुदेव आइए पवित्र कीजिए।**
विघ्नों का नाश करके सुख समृद्धि दीजिए।।

यजमान व याजक को संतुष्ट कीजिए।
जिनभक्ति करके निज हृदय को शुद्ध कीजिए।।५०।।

ॐ ह्रीं समस्त वास्तुदेवाः! इदं पूर्णार्घ्यं गृण्हीध्वं गृण्हीध्वं स्वाहा।

(शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्

जयमाला

-शेर छंद-

जय जय जिनेन्द्रदेव की मैं वंदना करूँ।
जय जय जिनेन्द्रदेव की मैं अर्चना करूँ।।
जय जय जिनेन्द्रदेव से अभ्यर्थना करूँ।
सम्यक्त्व प्राप्ति हेतु प्रभु से प्रार्थना करूँ।।१।।

जिस गृह में प्रभु विराजते मंदिर उसे कहते।
उन मंदिरों में उनके वास्तुदेव भी रहते।।
रक्षा सदैव मंदिरों-मकान की करते।
इस हेतु ही हम लोग आमंत्रित उन्हें करते।।२।।

जिन यज्ञकाल में वे निज वैभव सहित आते।
आह्वान करने वाले के संग प्रेम निभाते।।
जिनभाक्तिकों के लिए सुख व शांति प्रदाता।
सब वास्तुदेव गृहनिवासियों को दें साता।।३।।

मंदिर-मकान आदि का हर कोण शुद्ध हो।
वहाँ जाने-रहने वालों के परिणाम शुद्ध हों।।
तब ही तो पूजकों को इष्ट फल की प्राप्ति हो।
सब मानसिक व कायिक दुख की समाप्ति हो।।४।।

पूजा का यज्ञभाग सब स्वीकार कीजिए।
प्रभु भक्ति को निज मन में भी साकार कीजिए।।
इस वास्तु में निज योग्य स्वस्थान लीजिए।
परिवार अरु समाज को सुख शांति दीजिए।।५।।

चौरादि का प्रवेश नहीं हो यहाँ कभी।
भूतादि का प्रवेश भी होवे नहीं कभी।।
सर्पादि का भय भी न सतावे यहाँ कभी।
कीटादि भी प्रवेश न पावें यहाँ कभी।।६।।

परकृत सभी बाधाएँ दूर से ही नष्ट हों।
निज के भी रोग-शोक नशें नहीं कष्ट हो।।
मन के अभीष्ट सिद्ध हों तन से भी स्वस्थ हों।
इस वास्तु यज्ञ से समस्त भूमि शुद्ध हो।।७।।

प्रभु वीतराग से है मेरी याचना यही।
मन में तुम्हारी भक्ति रहे भावना यही।।
दुख संकटों में भी नहीं विचलित हो मन कभी।
जिनधर्म-धैर्य-गुरु के सिवा जाऊँ ना कहीं।।८।।

सब वास्तुदेवों से मेरा अनुरोध यही है।
सहधर्मियों का साथ हो अनुकूल यही है।।
तुम और हम मिलकर प्रभू की भक्ति करेंगे।
फिर ''चंदनामती'' अभीष्ट सिद्ध करेंगे।।९।।

ॐ ह्रीं अरिहन्तसिद्धादि नवदेवताकृत्रिमाकृत्रिमचैत्यालयरक्षकसमस्तवास्तुदेवाः इदं जयमाला अर्घ्यं गृण्हीध्वं गृण्हीध्वं स्वाहा।

(शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

इत्थं प्रार्थनया प्रगृह्य विदितं सामान्यमन्यं बलिम्।
सर्वे वास्तुसुराः प्रसीदत भवद्व्यांतरायास्तु ये।।
गेहे धाम्नि विधित्सिते च विविधोत्साहेऽथवा विष्टपे।
सन्त्येतान्सकलान्निवारयत तत्सर्वं सदा रक्षत।।५१।।

एवं जिनाधीश्वरयज्ञकाले, संतर्पिताः स्वस्वविभूतियुक्ताः।
वन्यामराः किन्नरदेवमुख्या, कुर्वन्तु शांतिं जिनभाक्तिकानाम्।।५२।।

ॐ-संपूजिता इत्यसुरेंद्रमुख्याः, महामहिम्नि प्रतिभासमानाः।
दशप्रकारोदितभावनेंद्राः, कुर्वंतु शांतिं जिनभाक्तिकानाम्।।५३।।
ॐ-मुख्याविभौ चंद्रदिवाकरौ च, शेषग्रहा अश्वयुगादिताराः।
प्रकीर्णका ज्योतिरमर्त्यवर्गा; कुर्वन्तु शांतिं जिनभाक्तिकानाम्।।५४।।

जिनेंद्रचंद्रस्य महामहेऽस्मिन्, संपूजिताः कल्पनिकायवासाः।
सौधर्ममुख्यास्त्रिदशाधिनाथाः, कुर्वन्तु शांतिं जिनभाक्तिकानाम्।।५५।।

ॐ-पृथ्वीविकारात्सलिलप्रवेशा-दग्नेश्च दाहात्पवनप्रकोपात्।
चौरप्रयोगादपि वास्तुदेवश्-चैत्यालयं रक्षतु सर्वकालम्।।५६।।

तिर्यक्प्रचारादशनिप्रघाताद्-बीजप्ररोहाद् द्रुमखंडपातात्।
कीटप्रवेशादपि वास्तुदेवश्-चैत्यालयं रक्षतु सर्वकालम्।।५७।।

विधान रचना काल

-दोहा-

वीर संवत् पच्चीस सौ, छत्तिस संवत् जान।
माघ शुक्ल दशमी तिथि, रच गया वास्तु विधान।।१।।

ज्ञानमती गणिनीप्रमुख, मात प्रसिद्ध महान।
उनकी शिष्या चन्दना-मती आर्यिका नाम।।२।।

जम्बूद्वीप की प्रतिकृती, निर्मित जहाँ प्रसिद्ध।
वहीं रत्नत्रय निलय में, लिखी गई कृति इष्ट।।३।।

गुरु करकमलों में किया, अर्पण वास्तु विधान।
सबको दे सुख-शांति यह, जग का हो कल्याण।।४।।

मंदिर-महल-मकान का, जब तक हो निर्माण।
तब तक इस कृति का करें, सदुपयोग इन्सान।।५।।

नवग्रहशांति स्तोत्र

रचयित्री–आर्यिका चन्दनामती

–शंभु छन्द –

सिद्धों का वंदन इस जग में, आतम सिद्धि का कारण है।
इनकी भक्ति से भक्त करें, दुर्गति का सहज निवारण है।।
सब तीर्थंकर भगवंत एक दिन, सिद्धि प्रिया को पाते हैं।
इसलिए सभी ग्रह की शांति में, वे निमित्त बन जाते हैं।।1।।

नभ में जो सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरू व शुक्र, शनि ग्रह माने।
राहू केतू मिलकर नवग्रह, ज्योतिषी देव के ग्रह माने।।
मानव के जन्म समय से ये, सब जन्मकुण्डली में रहते।
शुभ-अशुभ आदि फल देने में, राशी अनुसार निमित बनते।।2।।

जब ग्रह अनिष्टकारी होवे, तब प्रभु भक्ती रक्षा करती।
जिनसागर सूरि ने बतलाया, नवग्रह में नव प्रभु की भक्ती।।
श्रीपद्मप्रभ भगवान सूर्य ग्रह, के अरिष्ट को शांत करें।
ग्रह सोम का जब होवे प्रकोप, तब भक्त चन्द्रप्रभु याद करें।।3।।

निज मंगल ग्रह की शांति हेतु, प्रभु वासुपूज्य को नमन करो।
बुधग्रह जब देवे कष्ट तुरत, प्रभु मल्लिनाथ अर्चन कर लो।।
महावीर प्रभू गुरु ग्रह से होने, वाले कष्ट मिटाते हैं।
निज गुरुबल तेजस्वी करने हित, वर्धमान को ध्याते हैं।।4।।

श्री पुष्पदंत भगवान शुक्र ग्रह, के शांतिकारक माने।
शनिग्रह अति उग्र हुआ तो भी, मुनिसुव्रत प्रभु उसको हानें।।
ग्रह राहु अगर होवे अरिष्ट, तो नेमिनाथ का मंत्र जपो।
प्रभु पार्श्वनाथ के चरणों में, ग्रह केतु शांति हेतू प्रणमो।।5।।

ये नव तीर्थंकर नवग्रह की, शांति में हेतू माने हैं।
है दुख का मूल असाता ही, पर बाह्य निमित ग्रह माने हैं।।

जिन भक्ति असाता कर्मों को, साता में परिवर्तित करती।
ग्रह से उत्पन्न सभी बाधा, तब ही तो शांत हुआ करती।।6।।

पूजन-अर्चन के साथ-साथ, ग्रहशांति मंत्र का जाप करो।
जितनी संख्या जिस मंत्र की है, उसको कर मन संताप हरो।।
अपने प्रभु के अतिरिक्त कहीं, मिथ्यामत में मत भरमाना।
दुख संकट आने पर भी कभी, जिनधर्म को भूल नहीं जाना।।7।।

नवग्रहशांति की पूजन कर, नवग्रह का कभी विधान करो।
तीर्थंकर प्रभु के गुण गाकर, निज आतम गुण भंडार भरो।।
निज जन्मकुण्डली में स्थित, ग्रह को भी उच्चस्थान करो।
फिर सूर्य-चन्द्र सम शुभ प्रकाश से, जीवन का उत्थान करो।।8।।

बीसवीं सदी की प्रथम बालसति, गणिनी माता ज्ञानमती।
उनकी शिष्या ''आर्यिका चन्दनामति'' ने यह स्तुती रची।।
पच्चिस सौ तीस वीर संवत्, तिथि फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी।
निजशांति हेतु ग्रहशांति हेतु, प्रभु पद में अर्पित काव्यकृती।।9।।

णमोकार मंत्र स्तवन

–आर्यिका चंदनामती

–शिखरिणी छंद–

णमो अरिहंताणं, नमन है अरिहंत प्रभु को।
णमो सिद्धाणं में, नमन कर लूँ सिद्ध प्रभु को।।
णमो आइरियाणं, नमन है आचार्य गुरु को।
णमो उवज्झायाणं, नमन है उपाध्याय गुरु को।।।1।।

णमो लोए सव्वसाहूणं पद बताता।
नमन जग के सब साधुओं को करूँ जो हैं त्राता।।
परमपद में स्थित कहें पाँच परमेष्ठि इनको।
नमन इनको करके लहूँ इक दिन मुक्ति पद को।।2।।

सभी के पापों को शमन करता मंत्र यह ही।
तभी सब मंगल में प्रथम माना मंत्र यह ही।।
जपें जो भी इसको वचन मन कर शुद्ध प्रणति।
लहें वे इच्छित फल, हृदय नत हो चन्दनामति।।3।।

१. (अर्घ्य के साथ कोष्ट, उपलेट, फूल चढ़ाएँ)
२. (अर्घ्य के साथ दूध, घी, तगर चढ़ाएँ)
३. (अर्घ्य के साथ तिल का चूर्ण, तुअर का बाकरा चढ़ाएँ।)
४. (अर्घ्य के साथ तिल का तेल, तिल पापड़ी चढ़ाएँ।)
५. (अर्घ्य के साथ धाणी, दूध पाक, (रबड़ी) खीर चढ़ाएँ।)
६. (अर्घ्य के साथ पिसी हल्दी चढ़ाएँ।)
७. (अर्घ्य के साथ दूध में मिलाया हुआ भात चढ़ाएँ।)
८. (अर्घ्य के साथ घी, क्षीरान्न चढ़ाएँ।)
९. (अर्घ्य के साथ मैदा का घूंगरा और फल चढ़ाएँ।)
१०. (अर्घ्य के साथ उड़द की घूँगरी (बाकरा), तिल चढ़ाएँ।)
११. (अर्घ्य के साथ दही बड़ा, मैदा का भुजिया चढ़ाएँ।)
१२. (अर्घ्य के साथ दूध चढ़ाएँ।)
१३. (अर्घ्य के साथ चावल की धाणी और धनिये की धाणी चढ़ाएँ।)
१४. (अर्घ्य के साथ कपूर, कश्मीर केशर, लवंग आदि सुगंधित द्रव्यों से मिश्रित जल चढ़ाएँ।)
१५. (अर्घ्य के साथ मूँग का चूर्ण और फूल चढ़ाएँ।)
१६. (अर्घ्य के साथ चावल के बड़े और मूँग का चूर्ण चढ़ाएँ।)
१७. (अर्घ्य के साथ गुड़, मैदा का घूँगरा चढ़ाएँ।)
१८. (अर्घ्य के साथ गुड़, चावल का आटा, अम्बोली (इमली) चढ़ाएँ।)
१९. (अर्घ्य के साथ गुड़, चावल का आटा, सफेद कमल, शंख, अम्बोली चढ़ाएँ।)
२०. (अर्घ्य के साथ गुड़, चावल का आटा, सफेद कमल, शंख, अम्बोली चढ़ाएँ।)
२१. (अर्घ्य के साथ घी चढ़ाएँ।)
२२. (अर्घ्य के साथ ताजा मक्खन चढ़ाएँ।)
२३. (अर्घ्य के साथ गुड़ और सफेद फूल चढ़ाएँ।)
२४. (अर्घ्य के साथ ताजा मक्खन चढ़ाएँ।)
२५. (अर्घ्य के साथ ताजा मक्खन का गोला चढ़ाएँ।)
२६. (अर्घ्य के साथ हल्दी और उड़द का चूर्ण चढ़ाएँ।)

२७. (अर्घ्य के साथ तुअर के नैवेद्य व दूध चढ़ाएँ।)
२८. (अर्घ्य के साथ सौंठ, काली मिर्च व पीपल चढ़ाएँ।)
२९. (अर्घ्य के साथ गुड़ चढ़ाएँ।)
३०. (अर्घ्य के साथ कपूर और सुगंधित जल चढ़ाएँ।)
३१. (अर्घ्य के साथ रबड़ी चढ़ाएँ।)
३२. (अर्घ्य के साथ उड़द की घूंगरी चढ़ाएँ।)
३३. (अर्घ्य के साथ चावल का आटा चढ़ाएँ।)
३४. (अर्घ्य के साथ लड्डू चढ़ाएँ।)
३५. (अर्घ्य के साथ फूल और जल चढ़ाएँ।)
३६. (अर्घ्य के साथ लाल रंग का भात चढ़ाएँ।)
३७. (अर्घ्य के साथ तिल और अक्षत चढ़ाएँ।)
३८. (अर्घ्य के साथ गुड़ की मीठी पूड़ी चढ़ाएँ।)
३९. (अर्घ्य के साथ शक्कर पड़ा हुआ दूध और पका भात चढ़ाएँ।)
४०. (अर्घ्य के साथ श्रीखंड चढ़ाएँ।)
४१. (अर्घ्य के साथ गुड़ और भात चढ़ाएँ।)
४२. (अर्घ्य के साथ गुड़ के मालपुआ चढ़ाएँ।)
४३. (अर्घ्य के साथ मोदक—लड्डू चढ़ाएँ।)
४४. (अर्घ्य के साथ तिल पापड़ी चढ़ाएँ।)
४५. (अर्घ्य के साथ नमक डला हुआ भात चढ़ाएँ।)
४६. (अर्घ्य के साथ तिल और भात चढ़ाएँ।)
४७. (अर्घ्य के साथ उबाले हुए मूँग चढ़ाएँ।)
४८. (अर्घ्य के साथ घी और गुड़ चढ़ाएँ।)